

जग सार

(१०३)

श्रीकृष्ण गुण गायो भाई इहो जग सार आ
प्रेमियुनि लाइ वतो कृष्ण अवतार आ ॥

महा भाग सां तोखे मिली आ मानुष देही
विषयनि में सा विजांइ न वेही
भजन करण साणु बेड़ो तुहिंजो पार आ ॥

प्रेम जी मूरति करफणा सागर सभु गुण आगरू श्याम आ
शेष शारदा भी जंहिजो जपियो नित नाम आ
उहोई आनन्द कन्द गौलोक आधर आ ॥

श्रीकृष्ण नाम जे सुमरन सां थिया केई पापी पावन
मधुर रसीलो नाम आहे मन भावन
चइनी वेदनि में जंहिये महिमा जो उचार आ ॥

प्रेम जे वसि थी मोहन प्यारो बन बन गायूं चारे थो
पाण हारजी पंहिजे सखनि खटाए थो
शिव बृम्हा जो स्वामी अमड़ि जो बरू आ ॥

प्रेम जे वसि थी गोपियुनि जे घर मखण श्याम चोराए थो

मुरली वज़ाए ऐं गोपियुनि सम्भारे थो
प्रेमियुनि जे पालण लाइ परम उदार आ ॥

अलख अगोचर अज अविनाशी जंहिखे वेद पुकारिनि था
रिषी मुनी भी जंहिजो सदा ध्यानु धारिनि था
उहोई आनन्द कन्द बृज जो सींगार आ ॥

काली मर्दन कंस निकंदन प्यारो गिरिबर धारी आ
रसिक शिरोमणि संत सुखकारी आ
सांवरे साहिब तां ब्रान्हीं हीय ब्रलिहार आ ॥